मां हि पार्थ व्यपाश्रित्य येऽपि स्युः पापयोनयः ।
स्त्रियो वैश्यास्तथा शूद्रास्तेऽपि यान्ति परां गतिम् ।।
किं पुनर्ब्राह्मणाः पुण्या भक्ता राजर्षयस्तथा ।
अनित्यमसुखं लोकमिमं प्राप्य भजस्व माम् ।।

'हे पार्थ ! पापयोनि, स्त्री, वैश्य और शूद्र भी मेरी शरण होकर परम गति को प्राप्त हो जाते हैं। फिर पुण्यात्मा ब्राह्मणों और राजर्षियों के लिए तो कहना ही क्या है ? अतः इस दुःखमय और क्षणभंगुर संसार में तू मेरा ही भजन कर।' (गीता, ९.३२,३३)

वैश्य, स्त्री और शूद्र आदि निम्न श्रेणी के मनुष्य भी श्रीभगवान् को प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए असाधारण बुद्धि की आवश्यकता नहीं है। कहने का तात्पर्य यह है कि जो कोई भी भक्तियोग को अंगीकार कर श्रीभगवान् को जीवन का परम-लक्ष्य तथा निःश्रेयस (आश्रय) बना लेता है, वह भगवद्धाम में श्रीभगवान् को प्राप्त हो जाता है। भगवद्गीता में प्रतिपादित इस सिद्धान्त का आचरण करने से संसार की क्षणभंगुरता से उत्पन्न होने वाले जीवन के सब दुःखों का पूर्ण समाधान हो जाता है और जीवन कृतार्थ हो उठता है। यही सम्पूर्ण भगवद्गीता का सार-सर्वस्व है।

अस्तु, सारांश में, भगवद्गीता परम दिव्य शास्त्र है। इसका अध्ययन पूर्ण मनोयोग से करे। यह जीव का सब प्रकार के भय से परित्राण करने में समर्थ है।

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते।
स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात्।।

'कृष्णभावना के लिए जो कुछ भी साधन किया जाता है, उसका नाश अथवा ह्रास नहीं होता; इस पथ में की गई अल्पमात्र प्रगति भी महान् भय से रक्षा कर लेती है।' (गीता २.४०)

यदि भगवद्गीता का स्वाध्याय शुद्ध (निश्छल) भाव से मननपूर्वक किया जाय तो पूर्वकृत पाप कर्म फलित हुए बिना ही शान्त हो जाते हैं। गीता के अन्त में भगवान् श्रीकृष्ण का तुमुल उद्घोष है—

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।
अहं त्वां सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः।।

'सब प्रकार के धर्मों को त्याग कर एकमात्र मेरी ही शरण में आ जा। मैं तुझे सब पाप कर्मों से मुक्त कर दूँगा। तू भय मत कर।' (गीता १८.६६) इस प्रकार अपनी शरण में आए भक्त का पूर्ण उत्तरदायित्व श्रीभगवान् स्वयं वहन करते हैं और उसके सम्पूर्ण पापों को क्षमा कर देते हैं।

मनुष्य अपनी शुद्धि के लिए नित्य जल से स्नान करता है; किन्तु भगवद्गीता रूपी पावन गंगा-जल में तो जो एक बार भी स्नान कर लेता है, वह भवरोग की सम्पूर्ण मलिनता से सदा-सदाके लिये मुक्त हो जाता है। स्वयं श्रीभगवान् के मुख की वाणी इस गीता का पाठ करने वाले को किसी अन्य वैदिक ग्रन्थ के अध्ययन की